

## भारत में खाद्य मुद्रास्फीति

### प्रलिस के लयि:

[मुद्रास्फीति](#), [भारतीय रज़िर्व बैंक \(RBI\)](#), [मौद्रिक नीति समिति \(MPC\)](#), [उपभोक्ता खाद्य मूल्य मुद्रास्फीति \(CFPI\)](#), [लोकसभा](#), [नयूनतम समर्थन मूल्य \(MPC\)](#)

### मेन्स के लयि:

कसिनॉ पर बढती खाद्य मुद्रास्फीति का प्रभाव और देश के व्यापक आर्थिक संकेतक ।

[स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस](#)

## चर्चा में क्यों?

हाल के दिनों में उपभोक्ता खाद्य कीमतें वार्षिक रूप से 9.9% अधिक थीं, खाद्य मुद्रास्फीति अब काफी हद तक अनाज और दालों तक सीमित है तथा सरकार को उत्पादकों एवं उपभोक्ताओं दोनों की चिंताओं पर समान रूप से ध्यान देना आवश्यक है ।

## भारत में खाद्य मूल्य मुद्रास्फीति और अवस्फीति का हालिया परदृश्य:

### ■ अनाज और दालों में मुद्रास्फीति:

- अनुमान से पता चलता है कि **खाद्य मुद्रास्फीति** दो वस्तुओं द्वारा: **अनाज (11.9%) और दालें (13%)** क्रमशः जुलाई व अगस्त में तेज़ी से बढ़ी है ।
  - इस दौरान सबज़ियों की वार्षिक खुदरा मूल्य वृद्धि इससे भी अधिक, क्रमशः **37.4% और 26.1%**, रही ।
    - सबसे अच्छा संकेतक **टमाटर** रहा, जिसकी खुदरा मुद्रास्फीति इस अवधि के दौरान क्रमशः 202.1% और 180.3% रही ।

### ■ सरकार की रणनीति के कारण आवश्यक वस्तुओं में अवस्फीति:

- अधिकांश सरकारें स्वाभाविक रूप से राजनीतिक कारणों की वज़ह से उत्पादकों पर उपभोक्ताओं की संख्या अधिक होने से उपभोक्ताओं को विशेषाधिकार देती हैं । वर्तमान परदृश्य में **सरकार को** अन्य समस्याओं के अतिरिक्त, विशेष रूप से दो कृषि/खाद्य वस्तुओं के **उत्पादकों को** प्राथमिकता देनी चाहिये, ये हैं:

#### ● वनस्पति तेल नरिमाता:

- वर्तमान में (अक्टूबर माह) में सोयाबीन की कटाई और वणिणन शुरू हो गया है, लेकिन तलिन पहले से ही सरकार के **नयूनतम समर्थन मूल्य (MSP)** से नचिले स्तर पर व्यापार कर रहा है ।
- वर्तमान में **सोयाबीन की** मांग में विशेषकर **तेल और भोजन** के रूप में, (सोयाबीन से नरिमति पशुधन आहार सामग्री के रूप में उपयोग कया जाने वाला अवशष्ट तेल रहति केक) कमी दर्ज़ की गई है ।
- बाज़ार में मंदी का एक बड़ा कारण खाद्य तेल का आयात है । भारत का **वनस्पति तेल** आयात वर्ष 2022-23 में 17 मिलियन टन (mt) के उच्च स्तर तक पहुँचने का अनुमान है ।

#### ● दुग्ध उत्पादक:

- वर्तमान में **दूध पाउडर, मकखन या घी की खरीदारी में कमी दर्ज़ की गई है** । त्यौहारों (दशहरा-दवाली) के बाद, आमतौर पर सर्दियों में जब दुग्ध उत्पादन चरम पर होता है, दुग्ध उत्पादों की खरीद में कमी आती है ।
- **वनस्पति विसा के साथ मलावटी घी की बकिरी में कथति वृद्धि** ने उद्योग की समस्याओं को और बढ़ा दिया है । आयातित तेलों, विशेषकर ताड़ के तेलों की कीमतों में गरिवट ने मकखन एवं घी में सस्ते वसा के मशिरण को और अधिक बढ़ा दिया है ।

#### ● आवश्यक वस्तुओं के रूप में गेहूँ और चावल:

- परणामस्वरूप प्रभावी वतिरण के अभाव में अधिक आपूरति के कारण बाज़ार की कीमतों में गरिवट आ सकती है ।
- **अधिक उत्पादन:** भारत में कसिन प्रायः गेहूँ और चावल जैसी MSP-समर्थित फसलों का उत्पादन बढ़ाकर **नयूनतम समर्थन मूल्य (MSP)** को चुनौती देते हैं । इस अतउत्पादन से बाज़ार में बहुतायत हो सकती है, जिससे कीमतें MSP

से नचिले स्तर तक पहुँच सकती हैं।

- **अपर्याप्त खरीद और वितरण:** सरकार MSP निर्धारित करती है और किसानों से फसल खरीदती है, हालाँकि खरीद बुनियादी ढाँचा एवं वितरण प्रणाली अक्षम हो सकती है, जिससे खरीद में देरी तथा उपभोक्ताओं को अनाज का अपर्याप्त वितरण होता है।

## उपभोक्ता खाद्य मूल्य मुद्रास्फीति(CFPI):

- **उपभोक्ता खाद्य मूल्य मुद्रास्फीति (Consumer Food Price Inflation- CFPI), मुद्रास्फीति की एक विशिष्ट माप** है जो विशेष रूप से उपभोक्ता की वस्तुओं और सेवाओं में खाद्य पदार्थों के मूल्य परिवर्तन पर केंद्रित है।
  - यह उस दर की गणना करता है जिस दर से किसी सामान्य परिवार द्वारा उपभोग किये जाने वाले खाद्य उत्पादों की कीमतें समय के साथ बढ़ रही हैं।
  - CFPI व्यापक **उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (Consumer Price Index- CPI)** का एक उप-घटक है, **जहाँ भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI)** दर की गणना करने के लिये **CPI-संयुक्त (CPI-C)** का उपयोग करता है।
  - CFPI विशिष्ट खाद्य पदार्थों के मूल्य परिवर्तन को ट्रैक करता है जो सामान्यतः घरों में उपभोग किया जाता है, जैसे **अनाज, सब्जियाँ, फल, डेयरी उत्पाद, मांस और अन्य खाद्य पदार्थ**।

## उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI):

- **CPI मुद्रास्फीति**, जिसे **खुदरा मुद्रास्फीति** के रूप में भी जाना जाता है, वह दर है जिस पर उपभोक्ताओं द्वारा व्यक्तिगत उपयोग के लिये खरीदी जाने वाली वस्तुओं और सेवाओं की कीमतें समय के साथ बढ़ती हैं।
- यह भोजन, कपड़े, आवास, परिवहन और चिकित्सा देखभाल सहित सामान्यतः घरेलू वस्तुओं की खरीद एवं सेवाओं की लागत में बदलाव का आकलन करता है।
- **CPI के नमिनलखिति चार प्रकार हैं:**
  - औद्योगिक श्रमिकों (Industrial Workers- IW) के लिये CPI
  - कृषि मजदूरों (Agricultural Labourers- AL) के लिये CPI
  - ग्रामीण मजदूरों (Rural Labourers- RL) के लिये CPI
  - शहरी गैर-मैन्युअल कर्मचारियों (Urban Non-Manual Employees- UNME) के लिये CPI।
    - इनमें से **प्रथम तीन** के आँकड़े श्रम और रोज़गार मंत्रालय में **श्रम ब्यूरो (Labor Bureau)** द्वारा संकलित किये जाते हैं, जबकि **चौथे प्रकार** की CPI को सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (Ministry of Statistics and Programme Implementation) के अंतर्गत **राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (National Statistical Office- NSO)** द्वारा संकलित किया जाता है।

## खाद्य मूल्य मुद्रास्फीति के कारण:

- **आपूर्ति और मांग में असंतुलन:** जब खाद्य आपूर्ति और उसकी मांग के बीच असंतुलन होता है, तो कीमतें बढ़ने लगती हैं।
  - **वर्षा मौसम की घटनाएँ, फसल की वफिलता या कीट संक्रमण जैसे कारक कृषि उत्पादों की आपूर्ति को कम कर सकते हैं, जिससे कीमतें बढ़ सकती हैं।**
  - इसके विपरीत मांग में वृद्धि, शायद जनसंख्या वृद्धि या उपभोक्ता प्राथमिकताओं में परिवर्तन के कारण यदि आपूर्ति बिरकरार नहीं रह पाती है तो कीमतें भी बढ़ सकती हैं।
- **उत्पादन लागत:** किसानों के लिये बढ़ती उत्पादन लागत से खाद्य पदार्थों की कीमतें बढ़ सकती हैं। इसमें **ईंधन, उर्वरक और श्रम लागत** जैसे व्यय शामिल हैं।
- **ऊर्जा की कीमतें:** ऊर्जा की लागत, विशेष रूप से ईंधन, खाद्य आपूर्ति शृंखला में एक महत्वपूर्ण कारण है। तेल की कीमतों में बढ़ोतरी **सेबेत्तों से दुकानों तक खाद्य उत्पादों को लाने के लिये परिवहन लागत में वृद्धि हो सकती है, जिसके परिणामस्वरूप उपभोक्ताओं के लिये कीमतें बढ़ सकती हैं।**
- **मुद्रा वनिमिय दरें:** वनिमिय दरों में उतार-चढ़ाव खाद्य कीमतों को प्रभावित कर सकता है, खासकर उन देशों के लिये जो आयातित खाद्य पदार्थों पर बहुत अधिक निर्भर हैं। कमज़ोर घरेलू मुद्रा आयातित भोजन को और अधिक महंगा बना सकती है, जिससे मुद्रास्फीति में योगदान हो सकता है।
- **व्यापार नीतियाँ:** व्यापार नीतियाँ और टैरिफ, आयातित एवं घरेलू स्तर पर उत्पादित खाद्य की कीमतों को प्रभावित कर सकते हैं। **आयात पर प्रतिबंध से उपलब्ध खाद्य उत्पादों की विविधता सीमित हो सकती है और संभावित रूप से कीमतें बढ़ सकती हैं।**
- **सरकारी नीतियाँ:** सब्सिडी, मूल्य नियंत्रण या वनिमियों के रूप में सरकारी हस्तक्षेप **खाद्य कीमतों को प्रभावित कर सकते हैं।** सब्सिडी उत्पादन की लागत को कम कर सकती है, जबकि मूल्य नियंत्रण मूल्य वृद्धि को सीमित कर सकता है।
- **वैश्विक घटनाएँ:** भू-राजनीतिक संघर्ष, महामारी एवं व्यापार व्यवधान जैसी वैश्विक घटनाएँ **खाद्य आपूर्ति शृंखलाओं को बाधित कर सकती हैं** और खाद्य कीमतों में बढ़ोतरी का कारण बन सकती हैं। उदाहरण के लिये, **कोविड-19 महामारी** ने विश्व के कई हिस्सों में खाद्य उत्पादन और वितरण को बाधित कर दिया।
- **जलवायु परिवर्तन:** जलवायु पैटर्न में दीर्घकालिक परिवर्तन खाद्य उत्पादन पर प्रभाव डाल सकते हैं। अधिक और गंभीर मौसम की घटनाएँ, जैसे सूखा या बाढ़, फसलों को नुकसान पहुँचा सकती हैं तथा पैदावार कम कर सकती हैं, जिससे कीमतें बढ़ सकती हैं।

- **कृषि उत्पादकता को बढ़ावा:**
  - फसलों की पैदावार और पशुधन की उत्पादकता में सुधार के लिये कृषि अनुसंधान और प्रौद्योगिकी में निवेश करने की आवश्यकता है।
  - कृषमता बढ़ाने और उत्पादन लागत कम **आगे की राह** करने के लिये संधारणीय कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देना चाहिये।
- **खाद्य आपूर्ति शृंखलाओं का सुदृढीकरण:**
  - भोजन के खराब होने और बर्बादी को कम करने के लिये परिवहन एवं भंडारण के बुनयिादी ढाँचे में निवेश करना चाहिये।
  - यह सुनिश्चिाति करने के लिये वतिरण नेटवर्क में सुधार करना चाहिये ताकि भोजन उपभोक्ताओं तक कुशलतापूर्वक पहुँच सके।
- **व्यापार और बाज़ार एकीकरण को बढ़ावा:**
  - आवश्यक खाद्य पदार्थों पर व्यापार बाधाओं और शुल्कों को हटाने की आवश्यकता है।
  - खाद्य उत्पादों की स्थिर आपूर्ति सुनिश्चिाति करने के लिये अंतरराष्ट्रीय व्यापार को सुवधिाजनक बनाने की आवश्यकता है।
- **प्रतस्पर्द्धा को बढ़ावा देना और एकाधिकार शक्ति को कम करना:**
  - बड़े कृषि व्यवसायों द्वारा बाज़ार की एकाग्रता और मूल्य हेरफेर को रोकने के लिये एकाधिकारी व्यापार वरिधी कानून लागू कयिा जाना चाहिये।
  - कीमतों को प्रतस्पर्द्धी बनाए रखने के लिये खाद्य क्षेत्र में प्रतस्पर्द्धा को प्रोत्साहति करना चाहिये।

## UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्षों के प्रश्न:

**??????:**

**प्रश्न: नमिनलखिति कथनों पर वचिार कीजयि: (2020)**

1. खाद्य वसतुओं का 'उपभोक्ता मूल्य सूचकांक' (CPI) भार (Wegitage) उनके 'थोक मूल्य सूचकांक' (WPI) में दयिे गए भार से अधकि है।
2. WPI, सेवाओं के मूल्यों में होने वाले परिवर्तनों को शामिल नहीं करता है, जैसा कि CPI करता है।
3. भारतीय रज़िर्व बैंक ने अब मुद्रास्फीति के मुख्य मान तथा प्रमुख नीतगित दरों के निर्धारण हेतु WPI को अपना लयिा है।

**उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?**

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2
- (c) केवल 3
- (d) 1, 2 और 3

**उत्तर: (a)**

**??????:**

**प्रश्न. एक मत यह भी है कि राज्ज अधनियिातों के तहत गठति कृषि उत्पाद बाज़ार समतियिों (APMCs) ने न केवल कृषि के वकिास में बाधा डाली है, बल्कयिह भारत में खाद्य मुद्रास्फीति का कारण भी रही है। समालोचनात्मक परीक्षण कीजयि। (2014)**